आपातकाल में सृजन फुलवारी

बबिता कंसल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

बबिता कंसल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-200-5
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमें ल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www-antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, बबिता कंसल
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY BABITA KANSAL
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना)covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। में रे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यादवन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीपटीना सोनी-, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मैं चिरैया	6
2.	लोक व्यवहार	7
3.	मैं स्त्री	8
4.	मैं परायी	9
5.	हर हर गंगे	10
6.	संविधान	11
7.	सूरज	12
8.	क्योंकि लड़के रोते नहीं	13
9.	मैं नारी, मैं मां	14
10.	मानो या न मानो	15
11.	सीता राम	16
12.	भारत मां	17
13.	ओ पालन हारे	18
14.	कोरोना की पराजय	19

मैं चिरैया

मैं चिरैया अपने पिता की
कुछ बड़ी हुई लगी गुड़ियो संग खेलने!
मां की चाहत चिरैया भी दो अक्षर पढा लिखना सीख ले...
ना रह जाये उस जैसी अंगुठा छाप
मंजूर नही था पिता जी को, हो उस को भी अक्षर ज्ञान
बोले क्या करेगी पढ़ लिख कर, करना तो है घर का काम
जब आया भाई जीवन में
उस के लिए पिता को उमंग थी
बेटा पढ़ लिख कर बने कलैक्टर!
करेगा हमारा नाम रोशन
नयी पुस्तकें, नयी पोशाक
भाई जाने लगा पाठशाला...
चिरैया भी उस संग बैठ लगी पढ़नें, लिखनें..
जो वो पढ़ती सब रह जाते हैरान
सब सबक याद कर लेती समय न लगाता..
मां ने फिर एक दिन ले जाकर
नाम उस का भी लिखा दिया पाठशाला में ..
में धावी चिरैया ने फिर आगे पढ़ना शुरू किया
आज जब रिज़ल्ट आया वो थी
प्रथम सारे जिले में
नाम रोशन कर दिया आज मां, पिता का..।
पिता जी की आंखें भी भर आयी
लगा लिया अपनें गले लाड़ से...
पढ़ लिख भाई चला गया विदेश
चिरैया कलैक्टर हो कर
मां पिता की बन गयी बुढापे में सहारा..
आज पिता जी भी सीना तान कहते हैं सब से..
चाहे बेटा हो.. बेटी
समाज के हर व्यक्ति के लिए जरूरी है पढ़ाई लिखायी...।
सब को पढ़ना, लिखना है जरूरी
यही है सब खुशियों की कुँजी।

लोक व्यवहार

भारतीय संस्कृति में एक अहम हिस्सा
समाज में खुशी लाते
कभी जीवन में हलचल
लोक रिवाज, नेग व्यवहार
राधा ने भक्ती में सुध बुध खो
बिन जाने लोक व्यवहार
सहे लाझँन, पीना पड़ा विष
पाया कृष्ण का प्रेम
विवाह में करते है नेग व्यवहार
होती हँसी ठिठोली लोक व्यवहार
कभी हो जाता है गलत व्यवहार
समाज में फैली दहेज की कुरीति
बेटी के बाप की गले की फाँस
सहने पड़ते ताने बेटी को बिन दहेज़
लोक व्यवहार नेग रिवाज
है समाज में प्रचलित लोक व्यवहार
सहज ही देते है समाज में सादगी से संदेश...
प्राचीन मान्यताओं से जुड़ा
नेग व्यवहार बढ़ाता आपसी प्यार सौहार्दपूर्ण
इससे बनते रिश्ते भाई बहन के मजबूत, आपसी सहयोग से
हो जाते बड़े बड़े काम
त्यौहार की प्राचीन मान्यताएं आसानी से
समझती हमारी नयी पीढ़ी धर्म से जुड़ा है लोक व्यवहार
जो ना समझ पाये लोक व्यवहार
रह जाता अकेला व्यक्तिए समाज सेए परिवार से ....।

मैं स्त्री

मैं स्त्री हूं,
मैं कठपुतली
मां, बहन बेटी, पत्नी
कितने किरदार निभाती हूं
जीवन के रंग मंच के
धागों पर नाचती
कठपुतली सी
परिवार के रंगों में
कभी अच्छा
तो कभी मुसीबत में
नाचती ढाल बन कर
पत्नी बन सेवा करती
पति ही मान परमें श्वर
मन समर्पित तन समर्पित
रहती अटूट विश्वास बन
जो मन से उतरे पति के
कर दे उस का परित्याग
हां मैं स्त्री,
मैं कठपुतली
देना पड़ता प्रमाण अपना
मां बन कर,
वंश को बढ़ाना
जिम्मेदारी निभानी है
मैं स्त्री मैं ही कठपुतली,....

पति बिन नारी जीवन
कहलाता सर्वथा अर्थहीन
ना पहनें मन से ना संवारे तन
मैं स्त्री, मैं ही कठपुतली
जब रूठ जाती मां लक्ष्मी
तब पड़ते निवाले जुटाने
सब का पालन करना
शुभ-अशुभ का भार
उसी के हाथ
मैं स्त्री, मैं ही कठपुतली
जुड़ी हूं हर किरदार से
कभी मुझे परखा जाता
कभी धागे में बांधी जाती
कभी खींचा कभी छोड़ा
कभी स्नेह कभी अपमानित
इस पुरुष प्रधान समाज में
प्रभु रचना नारी की कर डाली
उसकी वेदना को जान लो
तुम नचाते हो सकल जगत
कठपुतली सा.....
इस भेद भाव को हर दो
जो बुन कर भेज दिये तुमने
धागों का यही खेल खेलती
मैं स्त्री, मैं कठपुतली...।

मैं परायी

फिर भी मैं पराई
अपनी नन्ही उंगली से पकड़
हाथ पिता आपका चलना सीखा
कभी घोड़ा बना, , कभी पड्डी चढ़
हर दम नाच नचाती
तुम गुड़िया कह मुझे दुलारते
में री हर जिद्द में मुझे मनाते
कभी लड्डू, कभी जलेबी मुझ को खिलाते
नन्ही कली की तरह मुझे संवारते
गलती पर तुम मुझे प्यार की चपत लगाते,
में रे माथे को चूम लेते
में री नादानी में मुझे समझाते
जिन्दगी का हर सबक सीखाते
प्रेम, अपनेपन के रंगों में रंगी
मैं हो गयी सियानी
राह पर खड़े लोग मिले हजार
कौन अच्छा, कौन बुरा
कराया एहसास
खड़े उस मौड़ पर
हुआ सामना रंगों से
पैर डगमगाये
संग साथी के चली गयी
पिता से ना किया इज़हार
यादों की मुट्ठी लिये
सपनों में भरे रंग हजार

लाड़ली ने पिता का घर छोड़ा
बना लिया आशियाना
तितली सी उड़ान भरी
ना कर पायी रिश्ते को मजबूत,
चाहा था घरौंदा मिला नर्क
प्रेम अपनेपन के रंग हुए सब धाराशाही .....।
आज चाहती है घर वापसी
पिता का सिर पर हाथ
रोयी, गिड़गिडड़ायी
पर पिता ने ना दिया साथ
दिया प्यार दुलार का वासता
पिता ने कहा हमारे लिए अब तुम पराई,
हमारे लिए मर गयी हो
में री नादानी की ऐसी ना सजा दो जन्मदाता
भूल पर मुझे करो माफ़
रिश्वतों की डोरी कभी टूट सकतीहै
प्यार, वात्सल्य कैसे चुक सकता
है स्नेह बंधन कभी छूट सकता है
मैं आज भी पहले जैसी हूं
तुम्हारे जिगर की टुकड़ा हूं
यादो की मुट्ठी थामें हूं
इतना नरम दिल
कैसे कठोर कर सकते है
एक बार फिर मुझे अपना कह दो
मुझे पराई से अपना बना लो .....।

हर हर गंगे

हर हर गंगे नमामि गंगे
पतित पावनी माँ गंगे
स्वर्ग से श्री हरि के चरणों से निकल कर
ब्रह्मा जी की पुत्री को
धारण किया शिव शंकर ने जटाओं में
पुर्वजों की मुक्ति हेतु
तप से सागर के पौत्र
भगीरथ लाये धरती पर
भव सागर से पार लगाये सबकों
हरहर गंगे माँ जय जय गंगे माँ
मोक्ष दायिनी पतित पावनी माँ गंगा आदिकाल से
पर्वत राज से निकल अनेक
टेढे में ढे रास्तों से होती हुई
लहराती बलखाती
अनेक फल-फूल उगाती
कलकल करती पावन धारा से
जनजीवन में जीवन का संचार करती
गौमुख से निकल कर कपिल मुनि के
आश्रम में गंगा सागर में समाती
इस की कृपा निराली
इस के जल से तन के रोग कटते
पापो को हर लेती सब के
अन्तिम समय प्राणी के मुख में
इसके जल की बूंद पड़े तो मोक्ष मिले...
जय जय गंगे माँ, पतित पावनी गंगे माँ.....।

संविधान

नारी जो
पोषित करती है नव सृजन को
धरती का है पर्याय
फैलाती है दिन रात अपनी सुगंध
करती है समर्पित अपने को
समाज, परिवार में,
ऐसी ही एक नारी प्रियंका
बेसहारों का सहारा थी
दुसरो की जान बचाती थी
पा, मां की प्यारी थी
समर्पित भाव से अपना फर्ज पूरा कर
निकल पड़ी थी उस रात में
ना बचा पायी अपनें आपको
वहशी दरिंदों ने हवस में सब हदें कर दी पार....
मसल दिया कोमल कली को
मडरा रहे थे वहीं गली में
ना भांप सकी उन के इरादे...
लुटी गयी फिर एक नारी
खड़ी आज आत्मा उसकी मांग रही न्याय,
इन पिशाचों को दो दंड ऐसा
ना कर पाये फिर घिनौना अपराध
न्याय के रक्षक, मीडिया चुप क्यों हैं आज
कैंडल मार्च से न चलेगा काम
कहते सेकुलर अपनें को, दबी क्यों आवाज आज
क्यों नहीं बोलते दो इन्साफ प्रियंका को।
रचना होगा नया संविधान।

सूरज

सुनो,
फूलों के मौसम में
पतझरों में, झरते
पत्तों के बाद,
पलाश, चमेंली खिल उठते हैं....।
हवाओं में महकती है उनकी खुशबू...
हौले हौले सहलाती है
हवाएँ में रे मन को
दवा बन तुम्हारी खुशबुओं से भर जाता है,
अन्तस का हर एक कोना....
तुम्हारी खुशबुओं की पायल पहन
मैं हो जाती हूँ बसन्त
महकती हूँ, तुम्हारे पास होने के अहसास में..
खो जाती हूँ अलग दुनिया में
आहिस्ता, आहिस्ता बन जाती है
इश्क की मजबूत हवेली.....।
प्यार की तपन में, सजल हो जाती है मन की धरा!
सूरज बन तुम्हारी किरणें, भर देती प्यार की उजास मन में...
इश्क में होना, अधरों पर ठहर जाता है....
जीती हूँ इश्क में... मैं इश्क हो जाती हूँ.....।

क्योंकि लड़के रोते नहीं

हम लड़के
हम भी इस समाज में जीते हैं
हमारे भी एहसास हैं
हमें भी दुख होता है
तकलीफ होती है
संवेदनशील हम भी हैं
हमारे दिल भी धड़कता है
हम भी प्रेम की भाषा समझते हैं
तकलीफ में आंखों में होता है नीर
लड़के नहीं रोते ये कैसी धारणा है
बचपन से जवानी तक यही सुना
अपनी भावनाओं को अन्दर दबा
रोते हैं दिल ही दिल में
क्या यही पुरूष होने का प्रमाण है
अन्दर की घुटन बना देती है
कितने ही मासूम नौजवानों को
मानसिक रोगी दुखो को सह जाते हैं
दुख दबाते रह, मिट जाती है उन
की संवेदनशीलता हो जाते हैं कभी कभी कठोर
नहीं कर पाते इन्सानियत का व्यवहार...
मन का दुख नहीं कह पाते,
क्योंकि यही कहां जाता है
लड़के कभी रोते नहीं
घर हो या हो जंग देश की
सभी जिम्मेदारियों को हम निभाते हैं..।

तुम पुरुष हो, ये कह धैर्य बढाना ठीक...
देती है हौसला हर जंग ज़ीने की
हम हर संघर्ष से उबर सकते है
हमारी भावनाओं को समझना होगा...
हम भी रोना चाहते है कान्धे पर रख
चाहते है पिता का हाथ फेरना सिर पर
मां की गोद में सर रख सोना चाहते है...
अपनी पत्नी के सामने गलती पर झुकना चाहते है
बेटी के संग सहृदय समय बीतना चाहते है
बेटे का मित्र बन उस से खेल में हारना चाहते है
हम इतने कठोर नही जितना
हम लड़को को मुखौटा पहनाया जाता है..
हमारा साथ देना होगा,
हमें भी दुख में दुखी हो रोना आता है
हम भी रो ले यही हमारे लिए
अच्छा..
घुटन से बचना
ना खो जायेगा बचपन असमय, रहेगी मासूमियत
धैर्य, मजबूती से जीवन जी
हम सब जिम्मेदारी बखुबी निभाते रहेंगे....।
कौन कहता है।
क्योंकि लड़के रोते नहीं।

मैं नारी, मैं मां!

मैं नीर भरी दुख की बदली
कभी दुर्गा, कभी काली
कभी गृहलक्षमी, कभी कोमल कली
जाने कितने नाम दिये तुमने
हृदय में धड़कन बहती मिलन की
आंखो में सपने पलते आस के
तुम को पाने की चाहत में
मिलोगे कभी व्याकुल रात दिन
जलती बाती सी चैन कहां
मैं नीर भरी दुख की बदली

तुम से था दिल का बंधन
जब मन आया खेला तुमने
मन भर गया तो साथी और चुना
तुम ने समझा शतरंज सदा
में रे लिए सौगात ईशवर की
मैं नीर भरी दुख की बदली

सोचा था जीवन धूप, छांव
जीवन में रहेगा साथ तुम्हारा
उम्मीद में प्रीत मन पलती रही
सांसो में नाम तुम्हारा
सांझ बन ढ़लती गयी
अधरों में है राग, तेरे मिलन.....।
अस्तित्व अपना समेंटती, तलाशती
सागर की लहरों की तरह
कभी बनाती कभी बिगड़ती रही
मैं नीर भरी दुख की बदली।

मानो या न मानो

सच्चा सुख
जो चाहत है सच्चे सुख की स्वार्थ भाव को छोड़ो प्यारे,
जो चाहत है प्यार और अपनेपन की....
निःस्वार्थ भाव पैदा करके ही सेवा भाव अपनाना है...
स्वार्थ भाव से ना करना अपने माता पिता का सम्मान
कभी निःस्वार्थ सेवा करना, उनका स्नेह आशीष पाओगे..।
मानो या न मानो
जो चाहत है सच्चे सुख की स्वार्थ भाव छोडो प्यारे...।
सच्चा सुख नही बिकता..
मन्डी और बाजारो में..
जो बाँटेगा मुस्कान.. बच्चो, नर, नारी, इन्सानो में...।
उनके दिल से दुआ पा जाओगे..
जो चाहत है सच्चे सुख की
स्वार्थ भाव छोड़ो प्यारे
जो छोड़ोगे स्वार्थ, मिलेगा वरदान सच्चे सुख का...।
मानो या न मानो
ये दुनिया बड़ी निराली है, हर रिश्ते में है, स्वार्थ यहाँ
अपने-अपने निज स्वार्थ में बेच देते है इन्सानियत..
जो रिश्तो में हो निःस्वार्थ भाव
तो जग में सब तुमहारे हो जायेगे...।
जो सच्चा सुख पाना है स्वार्थ भाव छोड़ो प्यारे..।
मानो या न मानो
ये देह माटी का पुतला है
सब रह जायेगा यही जग में
जो निःस्वार्थ प्रेम बाटोगे प्रभु प्रेम पाकर..
इस जग में नाम कमाओगे।
जो सच्चा सुख पाना है, स्वार्थ भाव छोड़ो प्यारे
मानो या न मानो

सीता राम

हाथों में जयमाला ले जनक सुता.....
ना देख साधते धनुष
जनक हुए व्याकुल
कोई राजा महाराजा नही
जो शिव धनुष साध सके
सीता हिय में मुस्कुरा रही
बसी छवि दशरथ नंदन की
जब से देखा उपवन में
राम, लखन संग जोड़ी
पुष्प तोड़ते दृष्टि मिली
देखते रहे प्रेम वश
हृदय का हाल सम
कैसा संयोग रहा उस पल
समय ठहर गया
सम्पुट पट मौन रहे
धड़कनें ने साज छेड़े
भूले सुध बुध सब
मन चंदन सा महक
स्नेहित हिय
नयनों में अनुराग रहा
समय का संयोग, मौन अधर
हिय में दोनों के समर्पित नाद रहा
जनक सुता ने, मां गौरा से मांगा
वर रुप में दशरथ नंदन।

भारत मां

जय गान करू इस माटी का
जिस में हमने जन्म लिया
सुख शांती से जीवन जिएं
बसे हर प्राणी में राम
है धर्म सुन्दर संसाधन
जिसकी धरातल पर
होता आध्यात्म का विचरण
जीवन का दर्शन दर्शाता
रिश्वतों का, मर्यादा का भान
करता पग-पग मार्ग दर्शन
सब मीत, मित्र, बंधुजन
खुशी, उल्लास से जीवन जीना
बंधुत्व का कर विस्तार
विश्व में सकल जगत को
समझो अपना ही परिवार
इस माटी का संदेश यही
"वसुधैव कुटुंबकम्"
सब प्रभु की सन्तान
भाई चारे से रहे सब.....।
मिले सब को जीने का अधिकार.....।

ओ पालन हारे

होता जगत में सवेरा तुम्ही से
संध्या पंख पसारती तुम्ही से
चंद्रमा, तारों की बारात तुम्ही से
छाये बादल नीले आसमान तुम्ही से
बीज से अंकुरित पौधे तुम्ही से
नवजीवन का सृजन तुम्ही से
बनाते वृक्ष छाया तुम्ही से
वक़्त की रफ्तार चक्र चलता तुम्ही से
आशा है विश्वास तुम्ही से
धीरज, संयम तुम्ही से
इस वैश्विक महामारी में
परिवर्तन का आगाज तुम्ही से
प्रभु आस्था, प्रार्थना तुम्ही से
संसार में महामारी की चुनौती
जीतेगें कृपा से तुम्हारी
मन में आशा है विश्वास तुम्ही से।

कोरोना की पराजय

कोरोना का शोर है सब तरफए फैला रहा है महामारी
जूझ रहे दुनिया के नर नारी
ये वायरस है संक्रमण का
तेज बुखार, गला खराब, होती खांसी भारी, सांस में पीड़ा
लगे अगर सांस लेना मुश्किल
तो तुरंत अपनी जांच करना
जो करोगे शीघ्रता से ईलाज, बच सकती है जान,
सुरक्षित सभी नाते, रिश्तेदार
इस से बचनें का उपाय है यही
स्वच्छता रखना, हाथ धोते रहना
ग्राम पानी से गले की करना सेक
लेना सुबह नींबू पानी, बनी रहेगी रोगप्रतिरोधक शक्ति
सेवन गिलोय, तुलसी, नीम सत्व, देता इसमें लाभ
अपने आयुर्वेद में है सटीक उपाय
भारत के संस्कार पा लेंगे इस पर विजय
खत्म कर देंगे हम विश्व से इस का कहर।
हाथ जोड़ नमस्ते करना, ना मिलाना हाथ किसी से,..
भीड़ की जगह से बचना, घर में ही रहकर करना काम
जो जाना पड़े बाहर, लगाकर जाना मुंह पर मास्क
घर में खाना स्वच्छता से बना खाना
बाहर होटल का न खायें खाना
ध्यान रखना अपनें सब का
अपने आसपास के जन का
खत्म होगा कोरोना का कहर
कोरोना पर विजय पा, अपने प्यारे वतन को बचाना।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

बबिता कंसल

Email- babitaconsul@gmail.com
Mobile - 7011043322

अन्तरा शब्दशक्ति के विषय मे जितना कहू कम है। ये एक ऐसा पटल है जिसमे सभी की बराबर मान दिया जाता है। चाहे वो वरिष्ठ हो चाहे नवांकुर! कुछ समय से स्वास्थ ठीक न होने के कारण मैं पटल पर सक्रिय नही थी। मैने प्रीति जी को बताया था। प्रीति जी ने मुझे अपनी रचनाएं भेजनें को कहा, और इस तरह उन्होने मुझे आपातकाल सृजन में न चाहते हुए भी मुझे सहभागी बना लिया। इस मंच पर बहुत कुछ सीखा है। रोज दिये विषय पर लिखकर कर मेरी लेखनी निखर रही है। इस समय देश में आपातकाल की स्थिति है, इस वैश्विक महामारी कोरोना के चलते देश में लाकडाऊन मे सभी अपनें घरों मे बन्द है।

देश विदेशों से इस महामारी के समाचार सुन कर मन भय, आशंकाओ से भर जाता है। कुछ लोग अफवाहे पैदा रहे है। जबकि इन बातों पर ध्यान न देकर सरकार द्वारा दी गयी सुचना और आयुष विभाग द्वारा दी गयी सभी गाइड लाइन को की बताया गया है। सोशियल डिस्टैट बनाये रखना जरुरी है। सावधानी बरतनी चाहिए। आपातकाल को नकारात्मक पहलू न समझ कर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। लॉकडाउन से मेरा मन बहुत आशंकित था। कि कैसे ये सब हम कर पायेगे। सभी सुख सुविधा के होने पर थोड़ी भी असुविधा कष्टप्रद लगती है। शुरु मे कुछ परेशानी अवश्य आयी। परिवार के सहयोग से सब ठीक लग रहा है। एक लम्बे समय के बाद आज परिवार का साथ मिल रहा बच्चों की पसन्द का खाना आज मैं उन के सहयोग से बना, खिला कर आनंद आ रहा है। अब सब व्यंजन घर पा ही बन रहे है। पतिदेव जो हमेशा घर के बाहर कामों के चलते समय घर मे कम दे पातें थे। आज घर मे बच्चों के साथ बच्चे बन सांप सीढी लूडों खेल रहे है। अपनें बचपन के किस्से सुना रहे है। घर मे सारे समय हंसी ठंटा होता रहता है शाम अपनी टेरेसा पर पक्षियों के कलरव सुन सब चहक रहे है। आजकल गोरैया फिर से दिखायी देने लगी है। मन बहुत खुश है ये देख की परिन्दे वापस आ रहे है। सब पोल्यूशन कम होने से ही हुआ है। आस पड़ोस के सभी लोगों का हाल पूछतें है। मेरी बागवानी पूरे चरम पर है। बच्चें फूलों, सब्जीयो के बारे में सीख रहे है। आपातकाल मे कम उपलब्ध संसाधन में ही संतुष्ट रहना चाहिए। आपातकाल मे संयम, अनुशासन से रहनें की सीख देता है। सरकारी, हमारे स्वास्थ्य कर्मी, जो भी अपनी जान पर खेल कर हम सब की सेवा मे लगे है उन का आदर करें। हम सब को इस कोरोना रूपी महामारी को हराना है। धैर्य रख सवेरा होगा, धैर्य रख जीत होगी, धैर्य रख सब साथ होगे, प्रकृति परिवर्तन कर रही है। हे मानव प्रकति मां से ही हमारा जीवन है। मां हमेशा अपनें बच्चों की सुख के बारे में ही सोचती है। डर मत संयम, के साथ हौसलों से इस महामारी को हरा।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-200-5

मूल्य 50/-